रात्रिक्लास 25/5/68 ओमशान्ति आत्मा अभिमानी भव्।

मीठे–2 बच्चे जब यहां आते हैं समझते हैं हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा से सुनते हैं। जब अपने–2 सेन्टर पर जाते हैं तो सामने बाप–दादा नहीं बैठते हैं। कहां–2 गोप भी चलाते हैं। मुरली तो सहज है। कोई भी धारण कर क्लास करा सकते हैं। ऐसे नहीं कि माताओं को ही हेड रखना है। मेल्स भी धारण कर मुरली चला सकते हैं। ब्राह्मणियां बैठी तो है। बाबा पूछते हैं कोई मुरली पढ़ कर फिर बाबा के आये हुये मुरली का सार सुनाते हैं। कोई मुरली पढ़ कर सुनाते हैं। जो मुरली हाथ में उठा सुनाते हैं वह हाथ उठावे। जो मुरली हाथ में नही उठा कर यानि कि बिगर मुरली के ऐसे ही सुनाते हैं वह भी हाथ उठावें। मुरली हाथ में तो होनी चाहिए। पढ़ें हुये हैं फिर भी सुनाते हैं। कोई मुरली पढ़े कर सुनाते हैं। नम्बरवार तो ज़रूर हैं। महारथी घोड़े सवार और प्यादे। सभी तो एक्युअल नहीं पढ़ते हैं। कोई तो पढ़ते भी रहते हैं। एडीशन कर रहस्य भी समझाते हैं रसीली नमूने। सभी ऐसे नहीं समझा सकते हैं। यहां तो बाप बैठे हैं। बाप बच्चों को कहते हैं कोई भी बात में संशय हो, संशय होना न चाहिए। एक बाप ही सभी कुछ जानते हैं। उन स्कूलों में तो अनेक पढ़ने वाले हैं। अलग–2 पढ़ाते। यहां तो एक ही पढ़ाते हैं। एक ही एमऑबजेक्ट है। उसमें प्रश्न पूछने का रहता ही नहीं। सुबह को यहां बैठ बच्चों को याद की यात्रा में मदद करता हूँ। ऐसे नहीं सिर्फ़ तुमको याद करता हूँ। सारी बेहद की याद रहती है। तुमको इस याद से ही सारे विश्व को पावन बनाना है। अँगुली तुम किसमें देते हो। पवित्र तो सारी दुनियां को बनाना है ना। तो बाप बच्चों पर नज़र रखते हैं। सभी शान्ति में चले जावें। सभी का अटेन्शन खिंचवाते हैं। जिनका योग है वह उठाते हैं। बाप तो बेहद में ही बैठेंगे। मैं आया हूँ सारी दुनियां को पावन बनाने। सारी दुनियां को कैरेन्ट दे रहा हूँ तो पवित्र हो जाये। जिनका योग होगा समझेंगे बाबा अभी बैठ कर याद की यात्रा सिखला रहे हैं। जिनसे विश्व में शान्ति होती है। बच्चों को भी याद किया जाता है। वह भी याद में रहते हैं। तो मदद मिलती है। जो अच्छी रीत याद करते हैं वह थोड़े हैं। मददगार बच्चे भी चाहिए ना। खुदाई खिज़मतगार। निश्चय बुद्धि ही याद करेंगे (ना।) तुम्हारी पहले सबजेक्ट है यह पावन बनबन (बनने) की। गोया तुम बच्चे निमित्त बनते हो बाप के साथ। बाप को बुलाते हो हे पतित–पावन आओ। अभी वह अकेला क्या करेगा। खिज़मतगार चाहिए ना। तुम जानते हो

25/5/68 4

हम विश्व को शान्ति बनाकर उस पर राज्य करेंगे। ऐसी बुद्धि होगी तब नशा चढ़ा हुआ होगा। तुम बच्चों को भारत को हेविन बनाना है। तुम जानते हो हम बाप की श्रीमत से अपने लिए योगबल से, किससे योग है? सर्व शक्तिवान से। उससे मदद ले अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। नशा रहना चाहिए ना। स्थूल जिस्मानी बात तो नहीं है। यह है रूहानी। नई नहीं है। बाप ने समझाय(ा) है बच्चे समझते हैं हर कल्प बाप इस रूहानी बल से हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह भी समझते हो शिवबाबा ही आकर स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। दुनियां को यह भी पता नहीं है परमपिता परमात्मा नई दुनियां की स्थापना करते हैं। कब कैसे–कैसे यह बिल्कुल ही नहीं जानते। गीता में भी आटे में लून है। बाकी तो सभी झूठ ही झूठ है। बाप आकर सत्य बताते हैं। भारत का योगबल तो नामी–ग्रामी है। बहुत जाते हैं भारत का राजयोग सिखलाने। बाप कहते हैं, हठयोगी राजयोग सिखला न सके; परन्तु आजकल तो झूठ तो बहुत हैं ना। सच्च के आगे इमिटेशन बहुत होती है; इसलिए सच्च को कोई मुश्किल जान सकते हैं। सभी सतसंग हैं झूठ की। हठयोगी हैं। यह तो बाप ही आकर सिखलाते हैं। राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। बाप कहते हैं कल्प–2 ऐसे होता है। अभी तुम नास्तिक से आस्तिक बन गये हो। ऋषि–मुनि आदि कहते हम रचयिता को और रचना को नहीं जानते हैं। नेती–2 इनका अर्थ भी नहीं जानते हैं। ऋषि–मुनि प्राचीन ही नहीं जानते। तो और पास फिर कहां से आया। गीता के ज्ञान को कोई नहीं जानते हैं। यह दादा भी बहुत पढ़ते थे।

अभी समझ मिली है जानते हो दुनियां तमोप्रधान हैं। बिल्कुल ही बेसमझ। भारत समझदार था। भारत पर ही खेल है। दूसरे धर्म कब आते हैं यह भी बच्चे समझते हैं। मूलवतन–सूक्ष्मवतन को भी तुम समझ गये हो। तुम जाते हो सूक्ष्मवनत से होकर। जब आते हो तो सूक्ष्मवतन की पहचान ही नहीं रहती। सिर्फ़ तुम ब्राह्मण ही यह नॉलेज पाते हो। देवताओं को तो यह दरकार ही नहीं रहती। तुमको सारी विश्व की यह नॉलेज है। तुम पहले शूद्र वर्ण के थे। ब्रह्माकुमारियां बनी तब तो यह नॉलेज देती हैं। जिससे तुम्हारी डीटी डिनायस्टी स्थापन हो रही है। ब्राह्मण कुल फिर सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। वह भी यहां संगमयुग पर स्थापना करते हैं। और कोई धर्म वाले फट से धर्म स्थापन नहीं करते हैं। उनको फिर गुरु नहीं कहा जा सकता। बाप आकर धर्म की स्थापना करते हैं। बाप कहते हैं अभी सरि(सभी) पर फुर्ना है बाप की याद का जिसमें घड़ी–2 में भूल जाते हैं। पुरुषार्थ भी करते रहें तो धंधा आदि भी करते रहें और याद भी करते रहें। हेल्दी बनने लिए बाप कमाई बड़ी ज़ोर से कराते हैं। ..... समय सभी को भूलाना पड़े। हम आत्माएं जा रही हैं। सभी को भूलाना पड़े। यह अभ्यास कराई जाती है। खाते हो, क्या बाप को याद नहीं कर सकते हो। कपड़ा सिलाई करते हैं बुद्धि योग बाप की याद में रहे। किचड़ा तो निकालना ही है। बाबा कहते हैं शरीर निर्वाह लिए भल करो। है तो बहुत सहज। समझ गये हो 84 का चक्र पूरा हुआ। अभी बाप राजयोग सिखलाने आये हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और बच्चों को नमस्ते।

रही हुई प्वाइन्ट्सः– यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी इस समय रिपीट होती है। कल्प पहले भी ऐसी थी। जो रिपीट हो रही है। रिपीटेशन का राज़ इस समय बाप ही समझाते हैं। कहते भी हैं वर्ल्ड रिपीट्स। वन गॉड वन रिलीज़न, कहते हैं ना। वहां ही शान्ति होगी। वह है अद्वैत राज्य। द्वैत माना आसुरी रावण राज्य। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है। भारत का ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। फिर पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। फिर बाप आकर पवित्र प्रवृत्ति मार्ग बनाते हैं। हम सो पवित्र देवता थे। (फिर) कल(प) कमती होती गई। हम सो शूद्र डिनायस्टी में आये। बाप पढ़ाते ऐसे हैं जैसे टीचर लोग पढ़ाते हैं। (स्टूडेन्ट) सुनते हैं। अच्छे स्टूडेन्ट पूरा ध्यान देते हैं। मिस नहीं करते। यह पढ़ाई रोज़ चाहिए। गॉडली यूनिवर्सिटी ..... एबसेंट न होना चाहिए। बाबा गुह्य–2 बातें सुनाते रहते हैं। अच्छा, ओम।